तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः ।

दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव ।।12।।

अन्वय शुद्धिमति तदन्वये शुद्धिमत्तरः दिलीप इति राजेन्द्रुः क्षीरनिधौ इन्दुः इव प्रसूतः।

अनुवाद जिस प्रकार क्षीर सागर से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ उसी प्रकार उन्हीं (सूर्यपुत्र मनु) के निर्मल वंश में उनसे भी अधिक कान्तिमान्, राजाओं में चन्द्रमा (श्रेष्ठ) दिलीप नामक राजा हुए।

टिप्पणियां

शुद्धिमति- शुद्धिमतुप् (शुद्धिवाले में), सप्तमी विभक्ति एकवचन। इस शुद्ध वंश में।

शुद्धिमत्तरः-शुद्धिमत् तरप्। विशेषण के साथ तरप् तथा ईयसुन् का प्रयोग होता है यदि विशेष्य अभिधा अथवा व्यञ्जना से वर्णित हो। यहां शुद्धिमत् विशेषण चन्द्रमा के साथ प्रयुक्त हुआ है। दिलीप अपने वंश से अधिक पवित्र है और चन्द्रमा क्षीरनिधि से उत्पन्न सभी रत्नों से अधिक पवित्र है।

राजेन्दुः इन्दु शब्द का प्रचलित अर्थ चन्द्रमा है, परन्तु यहां ''श्रेष्ठ'' अथवा 'उत्तम' में प्रयुक्त हुआ है

दिलीप अति प्रसिद्ध श्रेष्ठ राजा हुए। देखिये- **'सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थवाचकाः'** (अमरकोश)। ये शब्द ''श्रेष्ठ शब्द के अर्थवाचक हैं।''

क्षीरनिधौ इव जैसे दूध के समुद्र में चन्द्रमा उत्पन्न होता है वैसे ही नृपों में श्रेष्ठ महाराज दिलीप सूर्यकुल (रघुवंश) से उत्पन्न हुए।

इन्दुरिव पौराणिक परम्परा के अनुसार देवों और असुरों द्वारा समुद्र मन्थन किये जाने पर जिन चौदह रत्नों की उत्पत्ति हुई उनमें से चन्द्रमा भी है। यहां उपमा अलंकार है। मनुकुल और क्षीरसागर में साधारण धर्म है अतिशुद्धता और चन्द्रमा तथा दिलीप में आह्लादकत्व।